

मयावाकी वृक्षारोपण वधि

भारत के प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के अपने हालिया एपिसोड में [मयावाकी वृक्षारोपण](#) की अवधारणा पर चर्चा की। उन्होंने सीमति स्थानों में घने [शहरी वन](#) स्थापति करने की जापानी तकनीक पर प्रकाश डाला।

- उन्होंने केरल के एक शिक्षक रफी रामनाथ की प्रेरक कहानी का भी उल्लेख किया, जिन्होंने मयावाकी पद्धतिका उपयोग करके भूमिके एक बंजर टुकड़े को वदियावनम नामक लघु वन में परिवर्तित कर दिया।

The Miyawaki method for restoring tropical forests



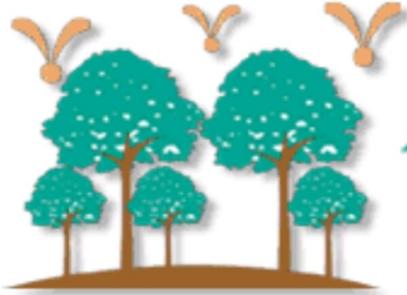
Germinate the seeds in a nursery, When two to three leaves have sprouted, move the seedlings to pots, Cultivate the seedlings in pots until their root groups generally fill the containers,



Cultivate under nets designed to cut out 60 percent of the sunlight for one to two months



Cultivate under nets designed to cut out 40 percent of the sunlight for one to two months.

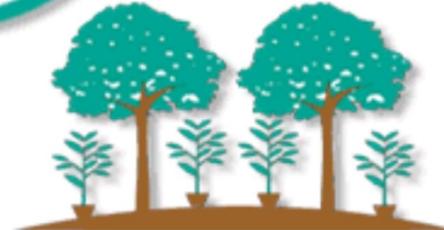


Obtain seeds from natural tropical forests

"No management is best management"



Plant and conduct maintenance for one to two years, From the third year entrust the trees to natural management At this point the rule is "No management is the best management"



Adapt to the natural environment in an existing forest (period of between one week and one month).

//

मयावाकी वृक्षारोपण वधि:

- परचिय:
 - मयावाकी पद्धतिकाे प्रणेता जापानी वनस्पति वैज्ञानिक अकीरा मयावाकी (Akira Miyawaki) हैं। इस पद्धतिकाे बहुत कम समय में जंगलों को घने जंगलों में परिवर्तित किया जा सकता है।

- यह कार्यवधि 1970 के दशक में विकसित की गई थी, जिसका मूल उद्देश्य भूमि के एक छोटे से टुकड़े के भीतर हरित आवरण को सघन बनाना था।
- इस कार्यवधि में पेड़ स्वयं अपना विकास करते हैं और तीन वर्ष के भीतर वे अपनी पूरी लंबाई तक बढ़ जाते हैं।
 - मियावाकी पद्धति में उपयोग किये जाने वाले पौधे ज्यादातर आत्मनिर्भर होते हैं और उन्हें खाद एवं जल देने जैसे नियमित रख-रखाव की आवश्यकता नहीं होती है।
- महत्त्व:
 - स्थानीय वृक्षों का घना आवरण उस क्षेत्र के धूल कणों को अवशोषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है जहाँ उद्यान स्थापित किया गया है। साथ ही पौधे सतह के तापमान को नियंत्रित करने में भी मदद करते हैं।
 - इन वनों के लिये उपयोग किये जाने वाले कुछ सामान्य स्थानीय पौधों में अंजन, अमला, बेल, अरजुन और गुंज शामिल हैं।
 - ये वन नई जैव-विविधता और एक पारस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहित करते हैं जिससे मृदा की उर्वरता में वृद्धि होती है।

मुंबई में मियावाकी वन पद्धति:

- मुंबई जैसे एक सीमित क्षेत्र वाले शहर में मियावाकी वृक्षारोपण पद्धति हरित आवरण को पुनर्प्राप्त करने में काफी मददगार साबित हुई है।
- जलवायु परिवर्तन से निपटने, प्रदूषण के स्तर को कम करने और शहर के हरित आवरण में वृद्धि करने के लिये मुंबई के विभिन्न खाली भूमि क्षेत्रों में बृहनमुंबई नगर नगिम (BMC) द्वारा मियावाकी वन दृष्टिकोण को लागू किया जा रहा है।
 - मुंबई में अब तक 64 मियावाकी वन लगाए जा चुके हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. "मियावाकी पद्धति" किसके लिये वखियात है: (2022)

- शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में वाणजियकि कृषि का संवर्द्धन
- आनुवंशिकित: रूपांतरित पुष्पों का प्रयोग कर उद्यानों का विकास
- शहरी क्षेत्रों में लघु वनों का सृजन
- तटीय क्षेत्रों और समुद्री सतहों पर पवन ऊर्जा का संग्रहण

उत्तर: (c)

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/miyawaki-plantation-method>